# किरदार

ये दुनिया एक नाटक है,
और हम सब एक किरदार में हैं।
नौटंकी अच्छी करते हैं
जो भी इस संसार में हैं,
जीवन इसकी कहानी है
थोड़ी नयी पुरानी है,
कोई नंगा घूमता है
और कोई राजा–रानी है,
यहाँ किसी की जेब है भरी हुई
और कोई रोटी की दरकार में है,
ये दुनिया एक नाटक है ,
और हम सब एक किरदार में हैं।
निर्देशक ऊपरवाला है
उसका ही सारा झमेला है,
इस नौटंकी को करने को
उसने ही किरदार में डाला है,
और इस नाटक की कहानी भी
उसके ही अधिकार में है,
ये दुनिया एक नाटक है
और हम सब एक किरदार में है।
ये किरदार बड़े निराले हैं,
कुछ गोरे हैं कुछ काले हैं,
कुछ अमीर गरीब भी होते हैं,
कुछ हिन्दू मुस्लिम वाले हैं,
कुछ भाषण देते फिरते हैं ,
और कुछ बैठे सरकार में हैं,
ये दुनिया एक नाटक है ,
और हम सब एक किरदार में हैं।

**आदर्श रस्तोगी**
**चतुर्थ वर्ष, वास्तुकला**